पुनीता सिंह

ई-मेलsingh.punita3 @gmail.com

ऑन लाइन

माँ का दम फूलता; लगता, अब गई कि तब गईं; फिर साँस लेने लगतीं। अस्पताल में सभी, धैर्य से, माँ की अन्तिम साँस की प्रतीक्षा कर रहे थे।

शरीर के सारे ऑर्गन फेल हो चुके थे। डॉक्टर ने कहा—"इन्हें अब घर ले जाओ।"

अब माँ अपने घर वापिस आ गईं। चेहरे पर मुस्कान और आँखों में सुकून दिखाई देने लगा था। चुपचाप बिस्तर पर लेटी रहतीं।

पंद्रह दिन निकल गए। तीनों भाई-बहन आपस में बातें कर रहे थे—

"राजे! मेरा अमेरिका लौटना बहुत ज़रूरी है। तू तो यहाँ है अभी। अब तो माँ ठीक लग रही हैं, पता नहीं कितने समय, कुछ कह नहीं सकते।" बड़े भाई ने काफ़ी परेशानी से कहा।

"नहीं भैया, आपको बताया था मेरा बिजनिश बहुत नुकसान में जा रहा है। एक भी दिन अब रुकने की गुंजाइश नहीं है।" छोटे भाई ने मजबूरी जताई।

बहन की भी बहुत बड़ी कंपनी में कोई बहुत बड़ी पोस्ट थी।

"आखिर माँ का दम क्यों नहीं निकल पा रहा है। डॉक्टर भी जवाब दे चुके हैं। अब तो चले ही जाना चाहिए। जब हम सब इतनी दूर-दूर से उनका अन्तिम संस्कार करने के लिए एकत्र हुए हैं, हमारे पास वक्त नहीं है और माँ हैं कि जिए जा रही हैं।"

आखिर पंडित जवाहर जी ने उपाय सुझाया—

"आजकल सब-कुछ ऑन लाइन सम्भव है और उनके फल भी ऑफ़ लाईन जैसे ही होतें हैं। ईश्वर को सब पता है। आप सभी की संवेदनाएँ और मजबूरियाँ भी वो देख रहा है! आप सभी अपने-अपने घर वापिस जॉब पर जा सकते हो। माँ जी जब परलोक सिधार जायेंगी तो ऑन लाइन शमशान में आप सभी शामिल हो सारे संस्कार निभा सकते हैं।"

जीवित माँ की वजह से जो मातमी सन्नाटा संतानों के चेहरों पर पसरा हुआ था, वो पल में सुकून में बदल गया।

सब चले गए माँ को दूर के, गाँव के एक नौकर के भरोसे छोड़कर; और एक हफ्ते बाद माँ भी चली गईं। उन्होंने पहले ही अपना शरीर मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया था। जैसे कह गईं—

"मेरे कमाऊ बेटा-बेटी, मेरे लिए ऑनलाइन वक्त बर्बाद करने की जरूरत नहीं।"